घायल की मदद

प्रिया बाजार जाने की तैयारी कर रही थी, तभी गोपी उसके पास दौड़ता हुआ आया। गोपी को आतुर आया हुआ देखा तो प्रिया ने पूछा, "**क्या बात है? तुम दौड़ कर क्यों आ रहे हो ?**

गोपी ने कहा, " सड़क पर एक्सीडेंट हुआ है और कोई उस आदमी की सहायता नहीं करना चाहता है, अगर आप से कुछ हो सके तो करो ?"

प्रिया हमेशा ऐसे कार्य में तत्पर रहती। जिसमे उसे हमेशा ही क्षति उठानी पड़ती थी,लेकिन किसी के काम आना, उसे पूर्ण रूप से संतोष प्रदान करता था।

जैसे ही वह उस व्यक्ति को अपनी गाडी में ले जाने लगी तो वहाँ मौजूद लोगों ने कहा, " आप क्यों मुसीबत मोल ले रही हो ? "

यह बात सुनते ही प्रिया भड़क गयी। उसने कहा, " इसमें मुसीबत लेने जैसी कौन सी बात है ? क्या किसी की मदद करना पाप है ? अगर आज आप किसी की मदद नहीं करेंगे तो कल आपकी कोई मदद करेगा क्या ? इंसानियत नाम की चीज है कि नहीं आप लोगों में ? " प्रिया की इस बात से लोगोंकी आँख खुल गयी और उन्होंने भी उस घायल इंसान की मदद की।

ईमानदारी का फल

एक सज्जन किसी दुकान पर काम कर रहे थे। दुकान के मालिक ने उस सज्जन व्यक्ति को **Bank** से दस हजार रूपए लाने का आदेश दिया। सज्जन व्यक्ति अपने कर्तव्य की पूर्ति हेतु बैंक चले गए।

बैंक में बहुत लम्बी कतार थी , फलतः कार्य में विलम्ब निश्चित था। लेकिन सज्जन व्यक्ति मैदान में डटे हुए थे। सज्जन को विलम्ब होता देख दुकान के मालिक का धैर्य डिग रहा था। इसलिए उसने सबसे **विश्वास पात्र नौकर** को उस सज्जन व्यक्ति का पता लगाने के लिए भेज दिया।

बैंक के नजदीक पहुंचकर विश्वास पात्र नौकर ने निरीक्षण किया, तो पाया कि जिस तरह स्वर्णकार अपने स्वर्ण को आकार देने से पहले आग में तपाता है। उसी प्रकार सूर्य देव के द्वारा सभी लोगों को तपाया जा रहा था। जिसमे सज्जन पुरुष भी एक थे।

विश्वास पात्र नौकर आकर मालिक से पूरी बात बताया। कुछ समय के उपरांत वह सज्जन पुरुष भी **दस हजार रूपए** को लाकर दुकान मालिक को दे दिया। मालिक को अपने **आचरण पर ग्लानि** हुई। वह अब उनके ऊपर बहुत विश्वास करने लगा और उन्हें कभी भी अपने दुकान से नहीं निकाला।

समय का उपयोग

योगिता पढ़ने में बहुत ही तेज लड़की थी, लेकिन वह गरीब घर की लड़की थी। गरीबों के भाग्य में ही सभी के हिस्से की तकलीफ मिलती है। आज उसके स्कूल में फ़ीस भरने का दिन था, लेकिन योगिता के पास फ़ीस भी भरने के पैसे नहीं थे।

योगिता की माँ ने गांव के सभी लोगो के यहाँ प्रयास किया सभी लोगो ने उसे दो दिन बाद का आश्वासन दिया। लेकिन आज ही योगिता को फ़ीस भरनी थी। कारण बाद में फ़ीस भरने पर फ़ीस का आधा पैसा दंड स्वरूप भरना पड़ता, जो योगिता के लिए संभव नही था।

एक बुढ़िया माँ से योगिता का कष्ट देखा नहीं गया। उसने अपने बटुए से एक मुड़ी हुई बीस रूपए की नोट योगिता को दे दी और अपनी फ़ीस भरने का आग्रह किया। दो दिन के पश्चात गांव के सभी लोग उसकी के मदद के लिए तैयार थे। लेकिन योगिता की फ़ीस भरी जा चुकी थी। उसने सभी को विनम्रता से इनकार कर दिया।